द्वितीय अध्याय

गिरिराज किशोर के नाटकों का सामान्य परिचय

द्वितीय अध्याय

"गिरिराज किशोर के नाटकों का सामान्य परिचय"

प्रस्तावना :

हिंदी नाटक साहित्य में शीर्षस्थ साहित्यकार के रूप में नाटककार गिरिराज किशोर का नाम उल्लेखनीय है। इनके साहित्य सृजन के केंद्र में मानवीय जीवन के विविध पहलू दृष्टव्य हैं। इनके विवेच्य नाटकों में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, पारिवारिक तथा मध्य-वर्ग के जीवन यापन की स्थिति का यथार्थ अंकन किया गया है। विवेच्य नाटकों का कथ्य नाटककार के उद्देश्यपूर्ति में सशक्त है। अत: इस अध्याय में विवेच्य नाटकों का सामान्य परिचय प्रस्तुत है।

विवेच्य नाटकों की कथावस्तु का सामान्य परिचय :

गिरिराज किशोर जी के नरमेध, प्रजा ही रहने दो, घास और घोड़ा, चेहरे-चेहरे किसके चेहरे, केवल मेरा नाम लो, जुर्म आयद और काठ की तोप आदि नाटकों की कथावस्तु का सामान्य परिचय निम्नलिखित है...

2.1 'नरमेध' नाटक का सामान्य परिचय :

प्रकाशन क्रम की दृष्टि से गिरिराज किशोर का यह पहला नाटक है। यह पारिवारिक नाटक है। गिरिराज किशोर की प्रस्तुत नाट्य रचना सन् 1972 में नटरंग प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुई। इस नाटक में पारिवारिक संघर्ष, मानसिक पीड़ा, नई पीढ़ी तथा पूरानी पीढ़ी के बीच का संघर्ष आदि समस्याओं को नाटककार ने स्पष्ट किया है।

'नरमेध' इस नाटक के प्रथम अंक का इस तरह है - तारा का बड़ा बेटा वन्दु नरेन की बेटी वंती से प्यार करता है, और उससे शादी करना चाहता है लेकिन तारा इस विवाह का विरोध करती है। वंती तारा के मंझले बेटे रंजन से बचपन से दोस्ती करती है लेकिन रंजन वंती से प्यार करता है। यह बात तारा जानती है इसलिए तारा

वंती को पसंद नहीं करती। तारा का मानना है कि वंती के कारण पारिवारिक संबंध बिघड़ जाएंगे। शादी को तारा का विरोध होने से वन्दु अमेरिका चला जाता है। वंती की शादी दुसरे लड़के के साथ तय हो जाती है। इसीलिए वंती अपनी शादी का कार्ड अमेरिका भेजती है। वन्दु निराश होकर अपनी माँ के प्रति उदासीनता दिखाते हुए पिता इंद्रराव को चिठ्ठी भेज देता है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है - "सुनोगे? सुनो। वंती के विवाह मे माँ को जरूर ले जायें। अब वंती से क्या नाराजगी? माँ का खयाल था वंती ने मुझे फसाया है। यह अच्छा हुआ वंती को मुझसे अच्छा लड़का मिल गया। लगता है ईश्वर और माँ के बीच एलायन्स है। ईश्वर ने उनकी बात तुरंत मान ली। मैं यही सोचकर अमेरिका चला आया था कि शायद मेरे पीछे माँ वंती के बारे में अपनी राय बदल देंगी। लेकिन उनके लिए ये हमेशा मुश्किल रहा है।"[1] उसकी चिठ्ठी तारा भी पड़ती है और वह खुद को दोषी ठहराते हुए खुदखुशी करने के लिए चली जाती है। तारा को उसका मंझला बेटा रंजन तथा छोटा बेटा अंकन तथा उसके पति इंद्रराव सभी जगह ढुँढ़ते हैं। कुछ समय बाद तारा वापस आ जाती है। अंकन तारा को बाहर जाने का कारण पूछता है लेकिन तारा जवाब नहीं देती इसलिए रंजन अंकन को बताता है कि वन्दू की चिठ्ठी के कारण माँ ने खुदखुशी करने की कोशिश की है।

वन्दु के पिता इंद्रराव वंती के घर जाकर अपने परिवार की हालत बताते हैं। वंती इंद्रराव को बताती है कि वह रंजन से बचपन से सिर्फ दोस्ती करती है, और इसी कारण चाची ने उसके और वन्दु के शादी के प्रस्ताव का विरोध किया है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है - "मुझे बहु चाहिए, द्रौपदी नहीं। चाची की बात पर मुझे आश्चर्य हुआ था। मन से तो द्रौपदियाँ सभी होते है चाची तो यह जानती थी।"[2]

इधर तारा की हालत देखकर रंजन और अंकन घबरा जाते हैं। वे तारा को खुदखुशी का कारण पूछते हैं। लेकिन तारा उनको बताती है कि वह जीवन से

---

1. गिरिराज किशोर - नरमेध - पृष्ठ - 36
2. वही - पृष्ठ - 40

छुटकारा पाना चाहती है। वह बार-बार खुदखुशी करने की कोशिश करती रहती है। रंजन तारा के खुदखुशी की खबर देता है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है - "मेमसाब गैस सिलिंण्डर खोले और हाथ में जली हुई दिया जलाई है मुंह और नाक से गैस सुड़क रही है।"[1]

द्वितीय अंक में अंकन तारा की सहेली नीरा के घर चला जाता है। वह उसके घर की पारिवारिक स्थिति नीरा को बताता है। नीरा वंती के बारे में पूछती है तब अंकन बताता है कि वंती ने चिट्ठी भेजी थी जिसमें उसने कहा था कि उसके कारण वन्दु और रंजन की शादी रूकी है इसीलिए वह किसी और के साथ शादी करने की बात करती है। नीरा तारा के घर जाकर इस स्थिति के बारे में पूछती है तो तारा बताती है कि मैं वंती के पिता नरेन के साथ प्यार करती थी और नरेन की बेटी वंती थी यह बात उसके पति इंद्रराव जानते थे। इसलिए इंद्रराव ने उससे बदला लेने के लिए नरेन से संबंध बढ़ाए और वन्दु के लिए वंती को चुना। इसी कारण पारिवारिक संबंध बिघड़ गए हैं। तारा घर की हालत देखकर वंती को दोषी ठहराती है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है - "मैं नीरा की बात से सहमत हूँ, वंती नरेन नहीं हो सकती। वह अपनी बाप की नकल करती है। नकली लोग मुझे बिल्कुल पसंद नहीं।"[2]

तृतीय अंक में तारा मानसिक पीड़ा से त्रस्त है इसलिए रंजन और अंकन तारा की तबीयत के बारे में पूछताछ करते हैं। तारा उन्हें बताती है मेरी तबीयत ठीक है। मेरी तबीयत बिघड़ जाने के कारण तुम सभी ने खाना भी ठिक तरह से नहीं खाया होगा। इंद्रराव उसका मजाक करता है, प्रस्तुत संवाद दृष्टिगोचर है - "सोचता हूँ कल उन्हें नूर मंजिल दिखा लाऊ।"[3] लेकिन तारा खुद को अपराधी मानती है। रंजन तारा को कहता है कि तुम ठिक हो जाओगी। तारा के पति इंद्रराव तारा की तबीयत के

---

1. गिरिराज किशोर - नरमेध - पृष्ठ - 45
2. वही - पृष्ठ - 58
3. वही - पृष्ठ - 62

बारे में तारा से पूछताछ करते हैं और उसकी राय भी पूछते हैं। देखिए - "मेरी राय? कुछ देर चुप रहकर आज नींद तो आ गयी। हो सकता है कल जरूरत ही न पड़े। जितनी गहरी नींद आयेगी उतना अराम मिलेगा। अपना इलाज अपने आप ही करना चाहती हूँ।"[1] तारा को लगता है कि नरेन ने अपने परिवार के तस्बीर में उसकी तस्बीर जोड़ी थी इसी कारण उसके बेटे वन्दु और रंजन उसे मानते हैं। तारा उस तस्बीर को जमीन पर पटक देती है।

निष्कर्ष :

'नरमेध' इस नाटक के कुल तीन अंक है जिसमें कुलमिलाकर आठ पात्र है। इसमें तीन नारी पात्र तथा पाँच पुरूष पात्र है। इस नाटक की मुख्य नायिका तारा है। यह नाटक मध्य-वर्ग परिवार के नई पीढ़ी के बीच के संघर्ष को स्पष्ट करता है। इस नाटक का उद्देश्य मानसिक पीड़ित नारी के अहंभाव तथा नई-पुरानी पीढ़ी के संघर्ष को स्पष्ट करना है। यह नाटक रंगमंच की दृष्टि से सफल नाटक है। यह नाटक मध्यवर्गीय परिवार पर आधारित है।

2.2 प्रजा ही रहने दो' नाटक का सामान्य परिचय :

प्रकाशन क्रम की दृष्टी से गिरिराज किशोर का यह दूसरा नाटक है। प्रस्तुत राजनीतिक नाटक है। गिरिराज किशोर लिखित 'प्रजा ही रहने दो' यह नाटक 1977 में नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली से प्रकाशित है।इस नाटक में लेखक ने सिंहासन पर अधिकार दिखानेवाले कुटिल राजनीति का चित्रण किया है।प्रस्तुत नाटक में अंधी राजनीति के कारण भाई-भाई को खत्म करता है और नारी पर अत्याचार करताहै।

'प्रजा ही रहने दो' इस नाटक का कथ्य इस तरह है - उदघोषक अगली अमावस्या को हस्तीनापुर के राजमहल में द्युत क्रिड़ा के अयोजन की घोषणा करता है। पांडव कौरवों की गंधी राजनीति खत्म करने के लिए कौरवों के साथ जुआ खेलने के

---

1. गिरिराज किशोर - नरमेध - पृष्ठ - 62

लिए तैयार होते हैं। धृतराष्ट्र गांधारी से इस भीषण खेल को रोकने के लिए कहता है। लेकिन गांधारी धृतराष्ट्र का विरोध करके सुयोधन का समर्थन करती है। धृतराष्ट्र सुयोधन से कहता है कि इस खेल के कारण भीष्मचाचा, द्रोण, कृपाचार्य क्या कहेंगे? लेकिन धृतराष्ट्र की बात कोई नहीं सुनता।

कौरवों की ओर से गांधारी का भाई शकुनि तथा पांडवों की ओर से धर्म राज युधिष्ठिर जुए में भाग लेते हैं। वहाँ उपस्थित सभी नागरिकों को जुए के खेल में शार्मील होना अनिवार्य किया जाता है। इसी कारण नागरिक उस राजनीति की निंदा करते हैं। शकुनि अपनी विद्या पर गर्व करते हुए युधिष्ठिर को डराने की कोशिश करता है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है - "ये उंगलियां सिखाये हुए पंक्षियों की भांति एक-एक पासे को मेरे पक्ष में बदल देंगी। एक-एक पासा मेरी इच्छा का दास है। तुम्हारा अपने पर भी नियंत्रण नहीं।"[1]

शकुनि पासे डालकर जित जाता है। वह धर्मराज को अपमानित करता है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है कि - "पांचाली तुम्हारी, तुम्हारी क्या सभी की रूपमती पटरानी है। गांडीव अर्जुन को उसके पिता इंद्र से उपहार में मिला और सत्य... छोडो, सत्य तुम्हे भावुक बना देता है। तुम ऐसा करो, उस खाऊ भीम की गदा दांव पर लगा दो। उसका मस्तिष्क गदा के अग्रभाग की तरह ठोस है। शक्तिशाली पर बुद्धिहिन व्यक्ति चाहे भाई हो या मित्र, शत्रु ही होता है।"[2] आगे चलकर शकुनि द्रौपदी को भी जीत लेता है। खेल में परास्त होने के कारण पांडवों को वनवास भोगना पड़ता है। बनवास समाप्ति के उपरान्त वे कौरवों के साथ युद्ध करने के लिए तैय्यार हो जाते हैं।

युद्ध शुरू हो जाता है जिससे धृतराष्ट्र चिंतित हो जाते हैं। युद्ध का अंतिम स्वरूप क्या होगा? किसकी जित और किसकी हार। इसका जिम्मेदार खुद को ही ठहराते हैं। वे सोचते है कि उन्होंने ही युद्ध करने का आदेश दिया था। कर्ण जब द्रौपदी

---

1. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 35
2. वही - पृष्ठ - 38

के बारे में बूरे शब्द प्रकट करता है तब विदूर उसे कहता है कि हमारी सामने हमारे बहु बेटी पर लांछन लगा रहे हो। तब कर्ण विदूर को कृष्ण की असलीयत बताता है। प्रस्तुत कथन देखीए - "विदूर जी अपने यह खुब कही कि आप वंश के अंदर हैं और मैं वंश के सड़क चलता। जिस कृष्ण का नाम आप तोते की तरह रटते हैं, उसी कृष्ण ने मुझे कहा था कि कर्ण, सुयोधन को छोड़कर पांड़वों के साथ आ जाओ। जिस द्रौपदी की लालसा से संजोय तुम मत्स भेद किये बिना ही लौटकर आये थे, वही द्रौपदी तुम्हारी भी पत्नी हो जाएगी।"[1] सुयोधन युद्ध करने के लिए तैयार हो जाता है। गांधारी सुयोधन को वज्र का बनाने के लिए समझाती है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है - "अपने सब वस्त्रों को उतारकर उसी निर्लेप भाव से निरावरण हो जाए जिस भाव से तुम मेरी गोदी में खेला करते थे। जहाँ-जहाँ मेरी दृष्टि पडेगी... तुम्हारा शरीर वज्र होता जाएगा।"[2] लेकिन सुयोधन लज्जा के कारण पूरे कपड़े नहीं उतारता इसीलिए गांधारी उसे फटकारती है और चिंतीत होकर उसे युद्ध में सावधान रहने की सलाह देती है। प्रस्तुत संवाद देखिए- "युद्ध से तु अपने इस अंग की रक्षा करना।"[3]

भीषण युद्ध से कुंती, विदूर, धृतराष्ट्र, गांधारी चिंतीत है। कुंती विदूर से कहती है कि राजकारोभार की इच्छा नहीं है। उसे उसके बेटे चाहिए। प्रस्तुत संवाद देखिए - "मुझे हार चाहिए ना जित, केवल अपने बच्चे सुरक्षित चाहिए।"[4] संजय को दिव्य दृष्टि होने के कारण धृतराष्ट्र तथा गांधारी को युद्ध का समाचार सुनाता रहता हैं। युद्ध में दोनों ओर की सेना मारी जाती है। कई घायल होते हैं। अंत में कौरव मारे जाते हैं, धृतराष्ट्र दु:खी हो जाता है। गांधारी धृतराष्ट्र से कहती है। पहले अगर युद्ध को रोक दिया होता तो यह भीषण स्थिति निर्माण ही न होती। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है - "काश पहले देख सकता अब कौन किस को देखे।"[5] इस युद्ध में द्रौपदी के पुत्र की

---

1. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 70
2. वही - पृष्ठ - 77
3. वही - पृष्ठ - 79
4. वही - पृष्ठ - 83
5. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 99

मृत्यु हो जाती है। इस कारण द्रौपदी खुद को अस्तीत्वहीन समझती है। वह युधिष्ठिर को भला-बुरा कहती है। प्रस्तुत संवाद द्रष्टव्य है - "आप तो राजा है लेकिन वह कैसा राजा जो अपने बच्चों को युद्ध में छोड़कर आया हो? यह विजय नहीं है। अब सब तुम्हारा खत्म हो गया है। कोई नहीं बचा। मैं अब महाराणी नहीं हूँ। मैं प्रजा हूँ। आप राजा है। आप राज कीजिए, प्रजा को प्रजा ही रहने दो।"[1]

निष्कर्ष :

इस नाटक में **6** दृश्य है तथा **14** पात्र हैं, जिसमें **11** पुरूष पात्र हैं और **3** नारी पात्र हैं। इस नाटक का मुख्य नायक धृतराष्ट्र है और नायिका गांधारी हैं। इस नाटक का खलनायक सुयोधन है। तथा सह-नायक के रूप में उद्घोषक है। यह नाटक पौराणिक है। इसका उद्देश्य है छल-बल से त्रस्त प्रजा के स्वरों को स्पष्ट करना तथा अंधी राजनीति को स्पष्ट करना। यह नाटक रंगमंच की दृष्टि से सफल नाटक है। इस नाटक का पहला प्रयोग 'दर्पण' कानपुर द्वरा फरवरी **1975** को संपन्न हुआ। प्रथम प्रस्तुति के पात्र इस प्रकार है...

धृतराष्ट्र	-	राकेश वर्मा
गांधारी	-	सुबिरा कपुर
सुयोधन	-	रतन पाल
कर्ण	-	एन.एस. चौधरी
संजय	-	के.बी.सक्सेना
द्रौपदी	-	कल्पना प्रसाद
कुंती	-	सुभाषिनी नायर
युधिष्ठिर	-	एन.कृष्नन
विदूर	-	भूपेंद्र कोतवाल

---

1. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - **110**

शकुनि	-	सुरेंद्र तिवारी
पहला प्रहरी	-	महेंद्र श्रीवास्तव
दूसरा प्रहरी	-	वीरेंद्र श्रीवास्तव
सेवक	-	भूपेंद्र कोतवाल
नागरिक	-	अरूण टण्डन
		सुशील सिन्हा
		राजेश दीक्षित
		श्यामलाल
		यशपाल धीमन
		सत्य मूर्ति
		बंसी कौल
		के.बी. सक्सेना
		विजय श्रीवास्तव
		सुरेश द्विवेदी
दासियाँ	-	अलका जीन
		सोमा जोशी
उद्घोषक	-	संतोष श्रीवास्तव

इस नाटक का पहला संस्करण **1977** में प्रकाशित हुआ तथा दूसरा संस्करण **1987** में नेशनल पब्लिशिंग हाऊस **23**, दरियागंज, नयी दिल्ली **110002** से प्रकाशित है।

2.3 'घास और घोड़ा' नाटक का सामान्य परिचय :

प्रकाशन क्रम की दृष्टी से यह गिरिराज किशोर का तीसरा नाटक है। यह सामाजिक नाटक है। गिरिराज किशोर की 'घास और घोड़ा' यह नाट्य रचना **1980** को सरस्वती विहार जी.टी.रोड़ शहदरा दिल्ली से प्रकाशित हो गई। 'घास और घोड़ा'

नाटक में किशोर जी ने सामाजिक, यौन और आर्थिक समस्याओं का चित्रण किया है। मनुष्य अपनी जरूरतों के लिए किस तरह विवश हो जाता है, किन-किन समस्या का सामना उसे करना पड़ता है आदि इस नाटक में चित्रित है। इस नाटक के तीन अंक हैं।

'घास और घोड़ा' इस नाटक की कथावस्तु इस तरह है- प्रथम अंक के पहले दृश्य में लेखक और निर्देशक में संवाद होता है। लेखक नाटक की स्क्रीप्ट निर्देशक को नहीं देता, क्योंकि उसकी भी स्थिति उस नाटक के कथा जैसी ही है। निर्देशक फिर भी माँग करता है। तो लेखक स्क्रीप्ट के कागज फेंक देता है। सभी पात्र कागज उठाकर संवाद पढ़ने लगते हैं और अपना-अपना अभिनय शुरू करते हैं। दूसरे दृश्य में पंडित ख्यालिराम का मकान दिखाया गया है। पं.ख्यालिराम आर्थिक समस्या से ग्रस्त गरीब है जो एक पाठशाला का हेड़मास्टर है। उसे दो संतान एक बेटा तथा बेटी है। बेटे का नाम द्वारिका और बेटी का नाम बिट्टो है। द्वारिका एल.एल.बी. कर रहा है। आर्थिक परिस्थितियों के कारण पं.ख्यालीराम तथा उसकी पत्नी पंड़िताईन द्वारिका की शादी पं.हजारीलाल की बेटी के साथ करना चाहते हैं। पंडित ख्यालिराम और उसकी पत्नी पंडिताईन अपनी गरीबी पंडित हजारीलाल को दिखाना नहीं चाहते हैं।उन्हें डर है कि अपनी गरीबी हजारीलाल के सामने आई तो यह रिश्ता टूट जाएगा। प्रस्तुत संवाद देखिए - "पहले कहते ना। किनच - किनचकर बात बताते हो। सिकार के बखत कुतिया हगाई। इतने भारी मानस कुटिया पर पधारे और यहाँ भंग के गिलास के सिवा कुछ हो ही नहीं। खड़े क्या हो, अपने उन कुँवरजी को बुलाओं। बगल वालों के यहाँ से कुर्सी मेज मँगवा लो। मैं बड़ी मिसराइन के घर गिरों गाँठ का इन्तजाम करके आती हूँ..."[1] पंडित हजारीलाल अमिर है इसीलिए वह यह समजता है कि रूपयों से कुछ भी खरीदा जा सकता है और इज्जत भी बड़ायी जा सकती है। उसकी बेटी ने जाट के ड्राइवर के साथ प्यार किया था जिसके कारण उसे लगता है कि उसकी इज्जत कम हो

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोड़ा - पृष्ठ - 180

गई है। लेकिन वह जानता है कि रूपयों के कारण पंडित ख्यालीराम शादी का विरोध नहीं करेगा। पंडित ख्यालीराम जिस पाठशाला का हेड़मास्टर है, उसका पंडित हजारीलाल अध्यक्ष है। वह पंडित ख्यालिराम के बेटे के साथ अपनी बेटी का रिश्ता पक्का करवाता है। और इसके बदले ख्यालीराम को संस्था का वैतनिक मंत्री बनाने का आश्वासन देता है।

नाटक के दूसरे अंक में प्रधान का बेटा एक आवारा लड़का है। अमिरी के कारण किसी पर भी जबरदस्ती करता है। उसके विमला नामक शादी-शुदा नारी से यौन संबंध है जिस पर वह पत्नी जैसा रोब जताता है। विमला का पति शराबी है और वह अपनी पत्नी को कोई भी सुख देने में असमर्थ है। इसलिए विमला शादी-शुदा होने के बावजूद प्रधान के बेटे के साथ यौन संबंध रखती है। विमला कहती है - "अपने लिए एक औरत ले आओ। पराए मर्द की औरत के सहारे कब तक रहोगे?"[1] विमला का भाई विमला को पूछता है कि प्रधान के बेटे को तुम घर में क्यों लेती हो? जिस कारण जीजाजी क्रोधित है। लेकिन विमला प्रधान के बेटे का पक्ष लेकर कहती है कि तुम्हारे जीजाजी चोरी के चक्कर में फसे थे तब उसी प्रधान के बेटे ने उसे छुड़ाया था। विमला पर भाई के समझाने का कोई असर नहीं पड़ता। वह प्रधान के बेटे को घर में लेती है। उसी समय उसका पति आता है और विमला से पूछताछ करता है कि प्रधान का बेटा क्यों आया था? विमला प्रधान के बेटे का पक्ष लेकर पति को ही खरी-खोटी सुनाती है। तभी प्रधान का बेटा विमला के पति के सामने आता है और दोनों में मारपीट होती है। प्रधान का बेटा विमला के पति रामनिरक का कत्ल कर देता है।

प्रधान बेटे का ही पक्ष लेता है। वह दरोगा, दीवान, पेशकर, न्यायाधीश आदि को पैसे देकर अपने बेटे को बचाना चाहता है। दरोगा विमला को उसके भाई के खिलाफ थाने में नाम दर्ज करने के लिए धमकाता है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "देखों बीबी, अपना आगा-पीछा सोच लो। उसे जाना था सो चला गया। तुम्हारी पूरी जिंदगी

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोड़ा - पृष्ठ - 163

पड़ी है। प्रधान का बेटा भला हो या बुरा अब जिंदगी उसी के सहारे कटनी है। रपट में लिखा ही बोलना। नहीं तो इसे फाँसी लगेगी और तुम गलत बचानी में जेल काटोगी। कभी भाई के लिए चुनचुनी मचे। इस सारे झंझट के पीछे तुम ही हो। उस लड़के को डोर पन डाला होता तो खून-खराबा न हुआ होता।प्रधान ने कहा -सुना तो बचा लिया, नहीं तो पिस्तौल तुम्हारे ही कब्जे से बरामद करता।मजा उठाया है तो भोगो भी।"[1] विमला उनके बातों में आकर तथा प्रधान के बेटे से प्यार करने के कारण पति का कत्ल करनेवाले प्रधान के बेटे के खिलाफ केस दर्ज करने के बजाय अपने भाई के खिलाफ केस दर्ज करके अपने भाई को फसाती है। वह खून के रिश्ते को भी भूल जाती है।

तीसरे अंक के पहले दृश्य में न्यायाधिश का घर दिखाया गया है।उनकी एक मासूम बेटी है जो समाज तथा कानून के बारे में बेखबर है। लेकिन उसे पता है कि उसके पापा एक न्यायाधिश हैं और लोगों को फाँसी देते हैं। लेकिन उसे यह मालूम नहीं है कि फाँसी क्या होती है? इसलिए वह फाँसी के बारे में जानने के लिए उत्सुक है।वह न्यायाधिश को कहती है कि आप सभी लोगों को फाँसी देते हैं। हमें भी बहुत सारी फाँसी दो ना? न्यायाधिश घबराते हैं। उस पर उखड जाते है। तो बेटी रोती है। न्यायाधिश की पत्नी न्यायाधिश पर चिल्लाती है कि, आप बेटी को जरा भी संभाल नहीं सकते। अत: बेटी के जिद के कारण न्यायाधिश बेटी को कहते हैं कि तुम्हें भी फाँसी दूँगा। बेटी खुश होती है, वह अपनी मम्मी को बताती है कि पप्पा मुझे फाँसी देंगे। फिर न्यायाधिश की पत्नी पति के इस बात से नाराज होकर मायके जाने की बात करती है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है - "तुम जज होंगे तो कचहरी में, यहाँ जजी चलाई तो मेरे से बुरा कोई नहीं होगा। तुम बाप होकर लड़की को फाँसी दोगे। कैसा कलयुग आ गया। बाप अपनी जजी अपनी एकलौती बेटी पर चलाएगा, उसे फाँसी देगा। देखो जी, आज से कभी भी ऐसी बातें कि तों मैं आग लगाकर जाऊँगी।"[2] थोड़ी देर बाद पेशकार

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोड़ा - पृष्ठ - 180
2. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोड़ा - पृष्ठ - 185

आकर न्यायाधिश को रूपये देकर जाता है। न्यायाधिश विमला के भाई के खिलाफ फैसला लिखते है और एक बेगुनाह को गुनहगार माना जाता है।

निष्कर्ष :

गिरिराज किशोर के इस नाटक में तीन अंक हैं। कुल पात्र 20 हैं, पुरूष पात्र 14, नारी पात्र 6 हैं। इस नाटक का नायक ख्यालिराम, नायिका विमला है। खलनायक प्रधान का बेटा है तथा सह-नायक लेखक और निर्देशक हैं। यह नाटक मध्यवर्गीय तथा अभावग्रस्त परिवार की स्थिति, समस्या, कुटनीति को स्पष्ट करता है। इस नाटक का उद्देश्य भारतीय समाज व्यवस्था में जाति व्यवस्था की स्थिति तथा नारी की स्थिति को स्पष्ट करना है। साथ ही भ्रष्ट राजनीति, प्रशासन व्यवस्था, पूँजीवादी तथा सामंतवादी लोगों द्वारा नारी शोषण को स्पष्ट करना है। यह नाटक रंगमंचियता की दृष्टि से सफल हुआ है।

इस नाटक का पहला प्रयोग 'रंगकर्मी आगरा' द्वारा हुआ है। इसके पात्र इस प्रकार है -

1	लेखक	-	राम शुक्ला
2	निर्देशक	-	अनिल शुक्ला
3	रंगकर्मी एक प्रधान का बेटा जज	-	इन्द्रेश वर्मा प्रसुन
4	रंगकर्मी दो दरोगा	-	प्रमोद झा 'राजनील'
5	महीला रंगकर्मी विमला जज की पत्नी	-	कु काजल शर्मा
6	विमला का भाई	-	पीयुष श्रीवास्तव
7	विमला का पति	-	ज्ञानेश पालीवाल
8	प्रधान	-	गोपालकृष्ण श्रीवास्तव
9	दीवान	-	गोपाल प्रसाद शर्मा
10	पेशकार	-	रूपनारायण अवस्थी
11	अर्दली	-	परागकुमार श्रीवास्तव

12	वकील नं एक	-	श्याम बाबू चेगले

प्रथम प्रस्तुति के कलाकार

1	मोटा वकील	-	मदनलाल छिब्बर
2	गवाह नं दो	-	शिवशंकर
3	जज की बेटी	-	कु रचना बख्शी
4	टाइप बाबू	-	सुभाष गर्ग

2.4 चेहरे-चेहरे किसके चेहरे' नाटक का सामान्य परिचय :

प्रकाशन क्रम की दृष्टि से गिरिराज किशोर जी का यह चौथा नाटक है। प्रस्तुत नाटक का प्रकाशन **1983** में लोकभारती प्रकाशन, **15A**, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद द्वारा हुआ है। यह व्यंग्य नाटक है। जिसमें भरतीय समाज व्यवस्था में स्थित सामान्य जन की पीड़ा, व्यथा से त्रस्त आम के जीवन यथार्थ को प्रतिकात्मक रूप में रेखांकित किया है। इसमें जनता के रक्षक कह जानेवाले राजनीतिक लोक मानवीयता के चेहरे का मुखौटा पहनकर किस तरह सामान्य जन का भक्षण करनेवाले बने हुए हैं। इसकी पोल खोलने का प्रस्तुत नाटक का केंद्रिय विषय है। नाटककार ने प्रस्तुत नाटक के कथ्य में राजनीतिक लोगों के ढोंगी, अत्याचारी चेहरे को बे नकाब किया है।

'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे' इस नाटक के प्रथम दृश्य में भारतीय समाज व्यवस्था में स्थित सामान्य जन जीवन तथा राजनीतिक चहल-पहल की स्थिति को दर्शाया है। यहाँ कोरस आम आदमी की व्यथा को स्पष्ट करने के लिए एक गीत को गाते हुए गरीब लोगों की स्थिति को उजागर करता है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है -

"खाओ लात
खाओ मात
धरती फाटे
जिया हाले
हाथों हाथ

झूठी बात
कठंती गांठ
घातम घात
पीछे देख
मटिया मेट।"[1]

इस नाटक के प्रथम दृश्य में मंच पर गाए गीत से स्पष्ट होता है कि मानव जीवन कई समस्याओं से पीड़ित तथा संघर्षरत है। अर्थात उक्त गीत नाटक के मूल संवेदना को स्पष्ट करते हुए आम आदमी की दयनीय स्थिति की ओर दृष्टिक्षेप करते हुए एक ही मनुष्य के कई मुखौटों को बेनकाब करने की ओर संकेत है। इसी संकेत के पश्चात् नाटक का प्रथम दृश्य समाप्त होता है।

इस नाटक के दूसरे दृश्य के प्रारंभ में आम आदमी का कई समस्याओं को हल करने के लिए चार चेहरों को प्रतिकात्मक मनुष्य के रूप में दिखाया है। यहाँ पर स्थित ये चारों पात्रों में से एक पात्र प्रमुख पात्र की भूमिका निभाता है। तो तीन पात्र महान पात्र के 'बहुजन हिताय - बहुजन सुखाय' इस प्रगतिशील विचारधारा को सहमती दर्शाते हुए आम आदमी की पीड़ाओं और जीवन त्रासदी तथा समस्याओं को हल करने के लिए विचार विमर्श करते हैं। इस दृश्य के चार पात्रों में से जो प्रमुख पात्र महान चेहरे के प्रतिकात्मक नाम से पुकारा जाता है। वह आम आदमी की दयनीय स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहता है कि - "मुझे उन लोगों पर भी गर्व है... वे सच्चे, भोले-भाले और निष्ठावान प्रजा है, अत्याचारों ने खोद दिये है। वे उन्हीं कुओं में लटके अपना दम तोड़ रहे हैं...।"[2]

अर्थात् इस दृश्य के उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि समाज के आम जन-जीवन की त्रासदी पर चिंतन करते हुए प्रतिकात्मक पात्रों को दिखाया है। यहाँ नाटक दूसरा अंक समाप्त होता है।

---

1. गिरिराज किशोर - 'चेहरे चेहरे किसके चेहरे - पृष्ठ - 11
2. गिरिराज किशोर - 'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे - पृष्ठ - 18

प्रस्तुत नाटक के तीसरे दृश्य में उपर्युक्त पात्रों के मुखौटों को दिखाया है। जो हर एक चेहरा दूसरे चेहरों की नकल करते हुए स्वयं को महान् तथा आदर्शवादी और मानवतावादी विचारों के चिंतकों की तरह समझता है, किन्तु हर एक चेहरा स्वयं की असलीयत को जानता है और कहता है समाज को आदर्श माननेवाले लोग हमेशा दुसरों को भी सच्चाई और मानवता के विचारों से महान बनाते है। साथ ही यह दृश्य उक्त विचारों को स्पष्ट करते हुए समाप्त होता है।

प्रस्तुत नाटक के चौथे दृश्य में मानव की विकृत मानसिकता को तथा गलत विचारों को दिखाया है। समाज में जब अज्ञान तथा नासमझ व्यक्ति आदर्श और समझदारी के चेहरे को अपनाकर झूठी विद्वता को दिखाता है। मनुष्य अपने अज्ञानता के कारण कई समस्याओं को किस तरह निर्माण करता है यह इस दृश्य में दिखाया है। जब राजनीतिक सत्तापर अयोग्य व्यक्ती सत्ताशील रहता है तब देश में आम आदमी को पीने के जल की समस्या को निसर्ग में स्थित वृक्षकों जिम्मेदार ठहराते कहता है पृथ्वी पर स्थित वृक्ष ही जल को नष्ट कर रहे हैं, जो इन वृक्षों को तोड़ना चाहिए इसके बारे में प्रस्तुत संवाद देखिए - "पिछे का इतिहास देखने से पता चलता है कि उन लोगों ने केले के गाद्य और आम के वृक्ष बहुतायत से लगवाये हैं। वे अब बड़े हो गये। धरती का सारा पाणी वे पी गये।"[1] अर्थात उक्त कथन से स्पष्ट है अयोग्य व्यक्ति अपने प्राप्त अधिकारों को गलत तरीके से अपना कर जन कल्याण के उपयुक्त निसर्ग में स्थित वृक्ष को जनविरोधी कहकर उन्हें नष्ट करने का निर्णय लेकर मानव को नैसर्गिक आपत्तियों की कई समस्याओं के सहाय्य में धकेलना चाहता है। जिसे प्रस्तुत नाटक के चौथे दृश्य में अंकित किया है।

प्रस्तुत नाटक के पांचवे दृश्य में अयोग्य व्यक्ति रामायण के पात्र अंगद के रूप में उभरता है। जो स्वयं को श्रेष्ठ समझता है। तो वहाँ का ही दूसरा पात्र उसे

---

1. गिरिराज किशोर - 'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे - पृष्ठ - 50

अपमानित करता है। इसके बारे में प्रस्तुत संवाद देखिए - "यह अंगद कैसे हो गया। थोड़ी देर पहले तक तो मेज झाड़ रहा था। अंगद ने पाँव क्यों गाड़ा था? कोई औरत वौरत का तो किस्सा था ना।"[1] उक्त विवेचन से स्पष्ट है दुनिया में सच्चाई को हमेशा स्वार्थलोलुप व्यक्तियों ने कुचलाया है तथा झूठे बेईमान लोगों ने अपनी शान शौकत में आम आदमी का शोषण किया है। जो इस दृश्य में स्पष्ट किया है।

अर्थात् सृष्टि में हर व्यक्ति अपने स्वार्थ में लिप्त है। वह अपने ही जीवन के बारे में सोचता है। जो दुसरों को महत्त्वहीन समझकर स्वयं की स्वार्थ प्रवृत्ति को किस तरह दिखाता है इसका यथार्थ चित्रण इस दृश्य से स्पष्ट होता है। व्यक्ति अपने स्वार्थ को कर्तव्य समझकर गलत रास्तों पर चलता है। जिससे स्वयं तथा दूसरों के जीवन में कई समस्यों को निर्माण करता है।

प्रस्तुत नाटक के दृश्य सात में नाटककार के निश्चित उद्देश्य को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है। जैसे प्रस्तुत नाटक के उपर्युक्त छः दृश्य में स्थित चार प्रतिकात्मक पात्र मानवीयता के खोखले, आदर्शवादी चेहरे पहनकर अपने अज्ञान तथा अयोग्य विचारों से मानव जीवन को अनेक समस्याओं में धकेलते हैं तथा मानव विरोधी विचारों को स्वीकार कर गलत निर्णयों को समाज विघातक बनाकर मानवीय जीवन कई समस्याओं में उलझने में लगे रहते हैं। अर्थात् उक्त विवेचन से स्पष्ट है मानव स्वयं समस्याओं को किस तरह निर्माण करता है इसे स्पष्ट किया है। एक, दो, तीन और चार महान चेहरे की प्रार्थना करते हैं।

निष्कर्ष :

'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे' इस नाटक में सात दृश्य हैं। कुल पात्र पाँच हैं। पुरूष पात्र पाँच हैं। इसमें स्त्री पात्र नहीं है। इस नाटक का मुख्य नायक महान् चेहरा है। यह नाटक आधुनिक परिस्थिति की भ्रष्ट राजनीति को स्पष्ट करता है। यह

---

1. गिरिराज किशोर - 'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे - पृष्ठ - 41

नाटक प्रतिकात्मक व्यंग्य है। इस नाटक में गिरिराज किशोर ने भ्रष्ट राजनीति, खोखले आचार-विचारों का पर्दाफाश किया है। इस नाटक का उद्देश्य मध्यवर्गीय लोगों का शोषण कर अमीर लोग अपने स्वार्थ हेतु किस प्रकार सफल बनते हैं इसको स्पष्ट करना है। 'रंगमंच की दृष्टि से यह सफल नाट्य रचना है। इस नाटक का प्रथम संस्करण 1983 को लोकभारती प्रकाशन, 15 महात्मा गांधी मार्ग इलाहाबाद से हुआ है।

2.5 'केवल मेरा नाम लो' नाटक का सामान्य परिचय:

प्रकाशन की दृष्टि से यह पाँचवा नाटक है। यह पारिवारिक नाटक है। प्रस्तुत नाटक हिंदी साहित्य भवन, कानपुर, 1984 से प्रकाशित किया गया है। नाटककार गिरिराज किशोर ने वर्तमान परिवेश में मनुष्य किस प्रकार अपनी कुंठित वासनाओं से अंधा होकर रिश्ते नाते भूलकर, अपनी बेटी को भी शिकार बनाना चाहता है इसका चित्रण किया है।

प्रथम अंक में लेखक दर्शकों कों रजनीकान्त का परिचय कराता है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है - "यही है श्री स्मृती रजनीकान्त। इनकी यह हालत देखकर दया भी आती है... दुख भी होता है।"[1] लेखक रजनीकान्त से पूछता है आपको कौन चाहिए, तब रजनीकान्त अपनी बेटी सुलभा के बारे में पूछताछ करता है तब लेखक घबराकर कहता है कि यह सुलभा का घर नहीं है। लेखक उसे कहता है कि यहाँ कोई सुलभा नहीं रहती। रजनीकान्त सुलभा का कमरा देखकर कहता है कि यह सुलभा का कमरा है। लेखक उसे समझाता है कि हाँ लेकिन उसी में अब मेरा अध्ययन कक्ष है।

दूसरे अंक में सुलभा अपनी माँ की मृत्यु के बाद मकान छोड़कर अपने पिता रजनीकान्त के साथ रहती है। अपने पत्नी की मृत्यु के कारण रजनीकान्त अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है। इसी कारण सुलभा राजनीकान्त से डरने लगती है। अपनी माँ की तस्वीर को सारी स्थिति बताती रहती है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "पापा

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो - पृष्ठ - 245

कितने अच्छे थे... अब उनके व्यवहार से लगता है उन्होंने कभी किसी को प्यार नहीं किया... बहुत नाराज... घृणा का भाव हर समय उनके चेहरे पर बना रहता है। बताओं मैंने ऐसा क्या किया... किया...।"[1] रजनीकान्त की मानसिकता बिगड़ने के कारण वह पागलपण जैसा व्यवहार करता रहता है। उसे सुलभा उसकी पत्नी रागिनी देवी जैसी दिखाई देती है। इसलिए वह सुलभा को बेटी के रूप में न देखकर पत्नी के रूप में देखता है। सुलभा जब उसे बार-बार पापा-पापा कहकर पुकरती है तब वह सुलभा पर घुस्सा करता है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है - "मैं वह सरकारी बंगला छोड़कर इस घर में इसलिए आया था कि माँ बेटी के उस माहौल से अलग रहकर तुम स्वतंत्र रह सको... निषधों को काचली की तरह उतारकर फेंक सको... मैं न तुम्हारी माँ हू न पिता। केवल मित्र, साथी, शुभचिंतक और एक दोस्त... तुमने सुना?"[2] रजनीकान्त सुलभा से बाहर घुमने के लिए चलने को कहता है। लेकिन सुलभा इन्कार करती है तब वह अपनी पत्नी की स्मृती में खो जाता है। वह अपनी पत्नी के बारे में सुलभा से कहता है कि तुम्हारी माँ ऐसी थी कि मैं एक कदम चलता तो वह दस कदम आगे चलती थी।

तीसरे अंक में चामड़िया और उसकी पत्नी मिसेज चामड़िया रजनीकान्त के घर आते हैं। फाईल के रिपोर्ट अच्छे बनाने के लिए चामड़िया और मिसेज चामड़िया रिश्वत देने का प्रयास करते हैं। रजनीकान्त की मानसिक स्थिति अच्छी न होने के कारण मिसेज चामड़िया सुलभा को रिश्वत देने का प्रयास तथा सुलभा के माँ की सहेली होने की बाते करती है। मिसेज चामड़िया सुलभा को बताती है, मैंने तुम्हारी मम्मी से कहा था कि तुम्हे मैं ऐसा गिफ्ट लाऊँगी जो उनके पास यादगार के रूप में रहेगा। लेकिन दुर्भाग्य से मैं गिफ्ट न दे सकी, ऐसा कहकर वह सुलभा को सोने की चेन देने का प्रयास करती है। लेकिन सुलभा स्वाभिमानी लड़की है। वह मिसेज चामड़िया की बातों में तो नहीं आती बल्कि वह मिसेज चामड़िया को फटकारती है। प्रस्तुत संवाद द्रष्टव्य है - "मैं हाथ

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो - पृष्ठ -250, 251
2. वही - पृष्ठ -251, 252

जोड़ती हूँ... ईश्वर के लिए आप मुझे क्षमा करें। मम्मी अब नहीं रहीं, वैसे भी मम्मी को ऐसी चीजों का शौक नहीं था। अगर वे होती तो कभी स्वीकार न करती।माँ को किसी से भी मिलने में संकोच होता था...अच्छा हो आप बाहर जाकर पापा से बात कर लें।"[1] चामड़िया भी रजनीकान्त को रिश्वत देने का प्रयास करता है। लेकिन रजनीकान्त उसे बताता है कि इस रूपयों के रिश्वत में मैं न आऊँगा। रजनीकान्त अपने पी.ए.आदमी को बताता है कि चामड़िया की फाईल जैसी है वैसे ही मुख्यमंत्री के पास भेज दो।

चतुर्थ अंक में रजनीकान्त की मानसिक स्थिति और ही बिगड़ जाती है। वह सुलभा को अपनी पत्नी रागिनी देवी के रूप में देखता है। रजनीकान्त की स्थिति का पता उसके डॉक्टर दोस्त को चलता है। इसीलिए डॉक्टर रजनीकान्त से मिलने के लिए उसके घर चला आता है। डॉक्टर रजनीकान्त से तबीयत के बारे में पूछते हैं, तब रजनीकान्त डॉक्टर से कहता है कि पहले नींद आती थी। लेकिन अब नींद नहीं आती है डॉक्टर रजनीकान्त की तबीयत बिगड़ने के कारण पूछने के लिए सुलभा को पुकारता है तब रजनीकान्त डॉक्टर पर घुस्सा होता है और डॉक्टर से कहता है - क्यों सुलभा को बुलाते हो। क्यों बुलाते हो सुलभा को? सुलभा क्या समझे। मरीज मैं हूँ या सुलभा? जो आता ही सुलभा... सुलभा...।"[2]

रजनीकान्त की मानसिक स्थिति इतनी बिगड़ जाती है कि सुलभा का दूसरों के साथ बात करना भी उसे अच्छा नहीं लगता है। इसीलिए सुलभा कमरे से बाहर नहीं आती थी। डॉक्टर को रजनीकान्त का यह बर्ताव ठिक नहीं लगता इसीलिए वे राजनीकान्त को समझाने की कोशिश करते हैं। लेकिन रजनीकान्त डॉक्टर को ही टोकता है। प्रस्तुत संवाद द्रष्टव्य है - "सबकी परवाह न करो डॉक्टर। सबकी परवाह का मतलब मैं खुब समझा हूँ। बस एक काम करो... अपनी नजरे इनायत मेरे इस घर पर से उठा लो। मुझे न किसी की हिस्सेदारी चाहिए और न हमदर्दी। ये हमदर्द अपनी

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो - पृष्ठ -250, 251
2. वही - पृष्ठ -251, 252

हमदर्दी की बड़ी भारी कीमत वसुल करते हैं..."[1] डॉक्टर रजनीकान्त के घर से चले जाते हैं। रजनीकान्त सुलभा के कमरे में जाता है और वह उसे शक की नजर से देखता है। सुलभा जब उसे 'पापा' कहकर पुकारती है तब वह शब्द उसे काँटों की तरह चुभ जाते हैं। इसीलिए रजनीकान्त सुलभा को फटकारते हुए कहता है - "क्या तुम चुप रहकर बात नहीं सुन सकती? क्या हर वाक्य में पापा लगाना जरूरी होता है बोलो।"[2]

पाँचवे अंक में रजनीकान्त सुलभा के कमरे में जाता है, सुलभा सो रही है यह देखकर वह अपने-आप से बाते करने लगता है। आवाज सुनकर सुलभा ड़र जाती है। उसे लगता है कि घर में कोई चोर घूस गया है। लेकिन रजनीकान्त बताता है कि घर में उनके अलावा कोई नहीं है। रजनीकान्त मानसिक पीड़ा से ग्रस्त होने के कारण सुलभा को अपनी पत्नी रागिनी के रूप में ही देखता है। वह सुलभा को स्त्री-पुरूष के बारे में बताता रहता है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है - "जिंदगी से जितना मेरा सरोकार बढ़ता जाता है उतना ही तुम लोग मुझे मौत की तरफ धकेलते हो। स्त्री-जाति-पुरूष-जाति और पुरूष जाति स्त्री-जाति को रिश्तों में बाँट-बाँटकर एक-दूसरे का उपभोग करते हैं... न स्त्री ही संपूर्ण पुरूष का साक्षात्कार करने की क्षमता रखती है और न पुरूष ही संपूर्ण नारी का साक्षात्कार करने का सामर्थ्य पाया है। टुकड़ों-टुकड़ों में होनेवाले ये अंशिक साक्षात्कार हमें सदा इसी तरह भटकाते रहेंगे...।"[3] बाद में लेखक आकर नाटक के बारे में बताता है लेकिन एक बुजुर्ग आदमी उसपर चिल्लाता है। इसलिए लेखक अंदर चला जाता है।

छठे अंक में रजनीकान्त अपनी नौकरी का इस्तीफा देता है। सुलभा घबरा जाती है। रजनीकान्त की मानसिक स्थिति जादा ही बिगड़ने के कारण वह रजनीकान्त से पूछती है कि डॉक्टर चाचा को फोन करके बुलाऊँ? लेकिन फिर एक बार रजनीकान्त उसे फटकारता है। उसे सुलभा का पापा कहकर पुकारना अच्छा नहीं लगता। प्रस्तुत

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो - पृष्ठ - 267
2. वही - पृष्ठ - 271
3. वही - पृष्ठ - 278, 279

संवाद देखिए - "रजनीकान्त-फिर कहा पापा...। भूल जाओ, इस मनहुस संबोधन को, भूल जाओ।रागिनी की तरह मुझे रजनी कहकर पुकारो...।पुकारो...।"[1] सुलभा रजनीकान्त को बताती है कि आप माँ और नौकरी चली जाने के कारण अपना मानसिक संतुलन खो बैठे हैं। आप मेरे पिता है यह कहकर सुलभा घर में जाती है।

अंत में रजनीकान्त सुलभा को 'रजनी' नाम लेने के लिए पिटता है। सुलभा मार खाती है लेकिन 'रजनी' नहीं कहती। प्रस्तुत संवाद द्रष्टव्य है - "मार लिजिए पापा, जी भरकर मार लिजिए। मैं आपकी बेटी हूँ... और बेटी ही रहूँगी।"[2] परदा गिरता है। और कोडों की आवाज आती रहती है।

निष्कर्ष :

नाटककार गिरिराज किशोर लिखित 'केवल मेरा नाम लो' इस नाटक में 6 अंक है। इस नाटक में कुल पात्रों की संख्या 14 हैं। इसमें पुरूष पात्र 10 हैं और नारी पात्र 4 हैं। इस नाटक का मुख्य नायक पात्र तथा खलनायक पात्र रजनीकान्त है तथा मुख्य नायिका के रूप में सुलभा है। इस नाटक का सह-नायक लेखक है। यह नाटक आधुनिक मध्य-वर्ग पर आधारित है। अपनी मानसिक पीड़ा के कारण रजनीकान्त सुलभा को अपनी हवस का शिकार बनाने का प्रयास करता है। इस नाटक का उद्देश्य मनुष्य की कुंठित भावनाओं को तथा भ्रष्ट रिश्वतखोरी को स्पष्ट करना है। यह नाटक रंगमंचियता की दृष्टि से सफल नाटक है।

2.6 'जुर्म आयद' नाटक का सामान्य परिचय :

प्रकाशन क्रम की दृष्टि से गिरीराज किशोर का यह छठा नाटक है। यह सामाजिक नाटक है। प्रस्तुत नाटक नेशनल पब्लिशिंग, 23 दरियागंज, नयी दिल्ली 110002 ने 1987 को प्रकाशित किया है। यह नाटक समस्या प्रधान नाटक है। समस्या के बारे में विमला भास्कर लिखती है - "मनुष्य इच्छाओं का दास है और इच्छाएँ सदैव

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो - पृष्ठ - 283
2. वही - पृष्ठ - 284

अतृप्त रहती है। यह अतृप्ती कालांतर में जीवन में समस्याओं का जाल सा फैला देती है।"[1]

'जुर्म आयद' नाटक की कथावस्तु इस प्रकार है-प्रथम अंक में एक पुलिस थाने का चित्रण किया गया है। उसमें पुलिस कर्मचारियों का आपस में संवाद होता है।

इस नाटक की मुख्य नायिका उम्मेदी है। उम्मेदी पीड़ा से त्रस्त होकर अपनी बेटी को लेकर खुदखुशी की कोशिश करती है जिसमें उसकी बेटी मर जाती है, और उम्मेदी बच जाती है। उम्मेदी पर बेटी के खुन का इल्जाम लगाकर उसे हवालात में बंद कर दिया जाता है उस पर पुलिस अत्याचार करते हैं। दरोगा उम्मेदी को धमकाता है। पति का नाम पूछने पर उम्मेदी कुछ नहीं बोल पाती तो दरोगा उम्मेदी से गंदी बातें करता है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है-"आदमी का नाम नहीं तो यार का सही।"[2] उम्मेदी को दरोगा का बर्ताव असहनीय हो जाता है। वह दरोगा का कठोर शब्दों में विरोध करती है। प्रस्तुत संवाद देखिए "दरोगा जी, इतना बड़ा हाक्कम होक्कें लुच्चों-लफंगो वाली बानी बोल्ले है।"[3] उसी वक्त पुलिस अफसर वहाँ आ जाता है। वह दरोगा को डाँटता है। अपने कानून में रहने की सलाह देता है और नारी के साथ अच्छा सलूक करने का हुक्म देता है। देखिए - "मर्दानगी घर में छीकें पर टांगकर आया करो,बरखुर्दार। साथ लिये घूमोगे तो लोग पकडकर अख्ता करा देंगे। जब तक चुप हैं, चुप है। अपनी पर आती है, तो हुकुमत को रूला देते हैं। मेरे हल्के में यह सब नहीं चलेगा। हटो यहाँ से मुँह काला करो। जाकर किसी पुरानी रंडी की भडुआगीरी करो, पता चले कि बात कैसे की जाती है।"[4] लेकिन उम्मेदी के पिता के उम्र का होकर भी दरोगा उम्मेदी को पाने की आशा रखता है।

दूसरे अंक में आदालत का चित्रण किया गया है। न्यायाधिश शिवचरण

---

1. विमला भास्कर - हिंदी में समस्या साहित्य - पृष्ठ - 10
2. गिरिराज किशोर - 'जुर्म आयद - पृष्ठ - 7
3. वही - पृष्ठ - 7
4. गिरिराज किशोर - 'जुर्म आयद - पृष्ठ - 8

और न्यायाधिश चौधरी कोर्ट के न्यायाधिश है। वकील बचाव उम्मेदी का पक्ष लेकर लड़ता है तो सरकारी वकील उम्मेदी के खिलाफ लड़ता है। बचाव वकील उम्मेदी को बचाने की कोशिश करता है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है - "बेटी का प्यार सबको एक बिंदु पर लाकर मिला दो। लेकिन हुआ उल्टा। पति ने बच्ची का बाप होने की सच्चाई तक को नकार दिया। जब तक गलाजत अपने तक महदूद थी, उम्मेदी देवी चुपचाप सह रही थी। कौन जाने आगे चलकर इस बेगुनाह बच्ची के साथ क्या सलूक हो। इसके पास दो ही रास्ते थे या तो शेरनी बनकर उनका खून पी जाती। उस हालत में भी उसके लिए दफा **307** थी। या फिर वही करती जो उसने किया।"[1] दूसरी ओर सरकारी वकील का मानना है कि उम्मेदी ने अपनी बेटी का कत्ल किया है इसीलिए उम्मेदी को जादा-से-जादा कडी सजा सुनाई जाए।

तीसरे अंक में न्यायाधिश शिवचरण की शादी-शुदा बेटी है आशा। जिसके पति व्यावसायिक और स्वार्थी है। आशा पति के साथ अपने पिता शिवचरण के घर रहती है। आशा अपने मित्र को फोन लगाना चाहती है लेकिन फोन नहीं लगता। उसी समय उसका पति आकर उसे पूछता है कि फोन किसे लगा रही हो? वह आशा से कहता है कि, फोन करना इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है। देखिए-"फोन इतना जरूरी नहीं जितना सेक्रेटरी साहब की पार्टी में मेरे साथ जाना। उन्होंने खास तौर से तुम्हें लाने के लिए कहा है। वे तुम्हे पसंद करते हैं।"[2] पति के ऐसी बातों से आशा क्रोधित हो जाती है तो वह कहता है, पत्नी को पति के चरणों में रहना चाहिए। सेक्रेटरी साहब के कारण पैसे अधिक मिल जाएँगे। तब आशा उसे मैं उन पैसों पर थूँकती हूँ कहती है और वह फोन की तरफ जाने लगती है तो उसका पति उसे पीटता है। आशा जहर खाती है। न्यायाधिश शिवचरण की पत्नी शिवचरण से डॉक्टर को फोन करने के लिए कहती है। शिवचरण फोन कर के डॉक्टर को बुलाते हैं। लेकिन डॉक्टर के वहाँ पहुँचने से पहले ही

---

1 गिरिराज किशोर - 'जुर्म आयद - पृष्ठ - **21**

2. वही - पृष्ठ - **35**

आशा की मृत्यु हो जाती है। न्यायाधिश शिवचरण डॉक्टर को बताते हैं कि आशा को उसके पति ने मारा है। लेकिन यह मेडिकल रिपोर्ट के अनुसार खून नहीं है। इसीलिए आशा के पति को कुछ नहीं कर सकते।न्यायाधिश शिवचरण पुलिस कमिशनर को बुलाकर लाश पोस्ट मार्टम के लिए भेज देते हैं।

अंक चार में न्यायाधिश चौधरी शिवचरण के घर आकर आशा की मृत्यु के संदर्भ में खेद प्रकट करते हैं। वे शिवचरण से कहते हैं कैसा जमाना आ गया है। बढ़ती उम्र की बेटी को घर में रखा भी तो नहीं जाता। मेरी बेटी अभी बारहवीं में पढ़ रही है।लेकिन ऐसी खबरें सुनकर दिल काँप उठता है।जस्टिश शिवचरण को न्यायधिश चौधरी पूछते हैं, आपको उम्मेदी देवी के मामले पर नजर डालने का मौका नहीं मिला होगा। उस फैसले की तारीख जल्दी डालने का ऑर्डर भी दिया गया है।आपने तो केस समझ लिया होगा। आपका क्या खयाल है? तो न्यायाधिश कानून के नियमों को स्पष्ट करता है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है - "यह सही है कि उम्मेदी ने खुदखुशी करने की कोशिश की, जो कि जुर्म है-एक जुर्म कि कितनी समस्याएँ? एक... दो... तीन... चार... आखिर कितनी? कुछ सजाए है जो बिना जुर्म साबित हुए खुद-ब-खुद आयद हो जाती हैं। उनका हिसाब न आदालत रखती, न समाज।"[1] न्यायाधिश चौधरी न्यायाधिश शिवचरण से कहते हैं कि हमें न्यायाधिश की दृष्टि से देखना चाहिए। अगर हम मुजलिमों को दफा तीन सौं नौं से बरी कर दे तो दफा तीन सौं सात का क्या होगा। शिवचरण न्यायाधिश चौधरी को बताते है कि कानून इंटेशन्स देखता है। याने ऐसा करने के पीछे मुजलिम की भावना क्या थी। अगर बच्ची को पानी में फेंक कर खुद लौट आती तो वह गुनाहगार हो सकती थी। लेकिन यह देखने के बाद पता चलता है कि उम्मेदी देवी का अपनी बच्ची को मार डालने का इरादा नहीं था। जिम्मेदार तो उसका पति है। जिसने अपनी बेटी को अपना मानने में ऐतराज किया। न्यायाधिश चौधरी कहते है कि

---

1. गिरिराज किशोर - 'जुर्म आयद - पृष्ठ - 47

मैं वरीष्ठ न्यायाधिश होने के नाते कहता हूँ कि हमें एक न्यायाधिश की दृष्टि से देखना चाहिए। एक अलग नजर से। माफ कीजिए लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि आपके घर के हादसे के कारण कही आपका अलग दृष्टि से देखने का नजरिया तो नहीं बदल गया। न्यायाधिश शिवचरण निराश हो जाते हैं।उन्हें भ्रम हो जाता है कि उनके सामने उम्मेदी तथा आशा और वह दोनों न्याय माँग रही है। शिवचरण उन दोनों को अपना दुख बताते हैं। न्यायाधिश खुद को कानून का कलम मानते है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "हम केवल कागज है। टाइप राइटर है और कलम है। हम दस्तखत हैं। हम दर्शक हैं। हम इन्सान क्यों नहीं रहे। हम एक-दूसरे को खींचने में फसते, कसते और मरने देखने के आदि हो गए है।"[1]

निष्कर्ष :

नाटककार गिरिराज किशोर का 'जुर्म आयद' यह नाटक समस्यापूर्ण नाटक है। इस नाटक की कथावस्तु कुल 4 अंको में विभाजित की गई हैं। इसमें कुल पात्रों की संख्या 26 हैं जिसमें 16 पुरूष पात्र, 7 नारी पात्र और 3 बच्चों के पात्र हैं। इस नाटक की नायिका उम्मेदी है। जस्टिश शिवचरण इस नाटका का नायक है। यह नाटक वर्तमान परिवेश को स्पष्ट करता है जिसमें कानून की समस्या, पारिवारिक समस्या आदि अनेक समस्याएँ है। नाटक का उद्देश्य भ्रष्ट कानून व्यवस्था, अंधे कानून व्यवस्था तथा नारी अत्याचार को स्पष्ट करना रहा है। प्रस्तुत नाटक मध्यवर्ग के खोकलेपन को स्पष्ट करता है। प्रस्तुत नाटक रंगमंच की दृष्टि से सफल है।

2.7 'काठ की तोप' नाटक का सामान्य परिचय :

प्रकाशन क्रम की दृष्टि से यह साँतवा नाटक है। यह राजनीतिक नाटक है। प्रस्तुत नाट्यरचना 2001 में नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 2135 अन्सारी रोड़, दरियागंज, नयी दिल्ली 110002 से प्रकाशित हो गई है। इस नाटक में वर्तमान, सांस्कृतिक, भौगोलिक एवं राजनैतिक स्थितियों का चित्रण किया गया है। मानवीय

---

1. गिरिराज किशोर - 'जुर्म आयद - पृष्ठ - 57

संबंध, संवेदना तथा भावनाओं का कोई अर्थ नहीं रहा है। आज इन्सान लालच के कारण छल, कपट कर रहा है। वह न रिश्ता देखता है और न ही इन्सानियत। वह सिर्फ लालची बन गया है। इस नाटक की कथावस्तु 3 अंको में विभाजित है।

प्रस्तुत नाटक की कथावस्तु इस तरह है -

प्रथम अंक में छोटे नवाब तथा बड़े नवाब में जायदाद का बँटवारा हो जाता है। दोनों एक-दूसरे से अमीर तथा सत्ताशाली बनना चाहते हैं। छोटा नवाब तथा बड़ा नवाब एक-दूसरे से खुद को अमीर समझते हैं। खर्चा कम होकर भी जादा खर्चा दिखाने की कोशिश करते रहते हैं।उन दोनों के यहाँ खर्चा दिखाने का काम मटरूमल करता है। मटरूमल जब बड़े नवाब का खर्चा छोटे नवाब से कम दिखाता है तब बड़े नवाब मटरूमल को धमकाता है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है - "वैसे हमारे पास उनसे ज्यादा रियाया है, खेत-खलिहान हैं, घोड़े हैं, तोप भी हमारी असली है, महल भी बड़ा है, अमला और खिदमतगार भी ज्यादा है - फिर उनका खर्च हमसे ज्यादा कैसे हो सकता है? अगर तुम हमारी बेइज्जती करने पर आमादा हो तो हमें तुम्हारा इलाज करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।"[1] मटरूमल डर जाता है। और अपनी जान बचाने के लिए छोटे नवाब से ज्यादा खर्चा बड़े नवाब का दिखाता है। बड़े नवाब को लगता है कि खर्चा बढ़ने से इज्जत भी बढ़ गयी है वह मटरूमल पर खुश हो जाता है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "आज तुमने हमारी इज्जत रख ली। बाप दादाओं के तोपखाने की इज्जत बचा ली।वरना हम कहाँ मुँह दिखाते।यह तो मुमकिन कैसे हो सकता कि छोटे नवाब का खर्चा हमसे बढ़ जाये। वे लायेंगे कहाँ से?"[2]

छोटे नवाब के दरबारी बड़े नवाब के तोप से घबराते हैं। वे कहते हैं कि बड़े नवाब के पास कदिमी तोप है।उसी तोप के कारण बादशाह अकबर साहब अनेक जंग लड़े थे और अनेक राजाओं को कदमों पर झुकाया थी, लेकिन ऐसी तोप आपके

---

1. गिरिराज किशोर - काठ की तोप - पृष्ठ - 12
1. गिरिराज किशोर - काठ की तोप - पृष्ठ - 14

पास नही है इसीलिए छोटे नवाब आपको सावधान रहना चाहिए। आपको भी हाथियार खरीदने चाहिए। छोटे नवाब व्यापारियों को बुलाता है। व्यापारी छोटे नवाब को हाथियार देने के लिए तैयार हो जाते हैं लेकिन वे आधि रक्कम की माँग कर बाकी रकम दो साल के अंदर देने के लिए कहते हैं। छोटे नवाब तैय्यार हो जाता है। व्यापारी से हाथियार खरीदकर वह बड़े नवाब के हिस्से पर गोलीबारी करवाता है। मटरूमल व्यापारियों के पास जाता है। तब व्यापारी उसे बताते हैं कि हम दूसरे पार्टी को भी हथियार भेजने के लिए तैयार हैं। हमें सिर्फ रूपया और तुम्हारा साथ चाहिए। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है - "हमें बाजार चाहिए। मुनाफा चाहिए। तुम जैसा दोस्त चाहिए, जो हमारे माल को खरीददार तक पहुँचा सके। तुम अपना हिस्सा लो हम अपना।"[1] मटरूमल भी उनमें शामील हो जाता है। मटरूमल लालची तथा स्वार्थी बनने के कारण बड़े नवाब को छोटे नवाब के खिलाफ भड़काते रहता है और बड़े नवाब को व्यापारियों के हाथियार खरीदने के लिए तैय्यार करता है। बड़े नवाब हाथियार खरीदता है। इसी कारण उन दोनों का सारा रूपया नष्ट हो जाता है। उन दोनों की आर्थिक स्थिति दयनीय हो जाती है। बड़े नवाब कहता है अब क्या होगा? मुसाहिब बताता है कि अब लौटना मुश्किल है।

तीसरे अंक में मटरूमल छोटे नवाब तथा बड़े नवाब को कर्जा देने के लिए एक कंपनी के सदर के पास ले जाता है। मटरूमल बड़े तथा छोटे नवाब को सदर के बंगले में एक ही कमरें में रहने के लिए कहता है। मटरूमल को छोटे तथा बड़े नवाब पूछते हैं कि हम कहाँ सायेंगे? तब मटरूमल कहता हैं कि एक ही पलंग पर सोना पड़ेगा। वे दोनो पलंग पर सोना चाहते हैं लेकिन वह पलंग इतना छोटा था कि उस पर केवल एक ही आदमी सो सकता हैं। बड़े तथा छोटे नवाब एकदूसरे पर शक करते हैं तभी वहाँ मटरूमल आ जाता है। वह उन दोनों से पूछता है कि यह पलंग तो सदर ने भेजा है लेकिन अब तक आप क्यों नहीं सो गये? मटरूमल उन्हें सोने की तरकीब नहीं

---

1. गिरिराज किशोर - काठ की तोप - पृष्ठ - 21

बताता है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "तरकीब लगानी होगी। तरकीब से तकदीर बनती हैं।"[1] आप दोनों को उस पलंग पर सोना पड़ेगा और एक बात का ध्यान रहें पाँव निचे भी ना गिरे। मटरूमल चला जाता है। छोटे तथा बड़े नवाब एक-दूसरे पर आरोप करतें है। लेकिन सदर को नाराज नहीं करना चाहते।

अंत में बड़े नवाब को एक तरकीब याद आती है। वह अपना इजारबंद निकालता है लेकिन इजारबंद कम पड़ जाता है इसलिए छोटे नवाब का भी इजारबंद लेता है। छोटे तथा बड़े नवाब सिर्फ पाँव पलंग पर रखते हैं। पांव गिर ना जाए इसलिए इजारबंद से एकदुसरे के पैरो को बांधते हैं और एक-दूसरे के विरूद्ध दिशा में सो जाते हैं। इसी तरकीब के कारण दोनों के पैर नहीं गिरते। सुबह हो जाती है। सदर और मटरूमल उनको देखते हैं। सदर खुश होकर उनकी तरकीब को दाद देता है और इसी खुशी ने उन्हें मदद करने के लिए तैयार हो जाता है।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत यह नाटक तीन अंको में विभाजित है। उसमें तीन दृश्य है। इस नाटक में कुल पात्रों की संख्या **13** है। जिसमें **13** पुरूष पात्र है इस नाटक में मुख्य पात्र बड़े तथा छोटे नवाब हैं। इस नाटक में स्त्री पात्र नहीं है। सह-नायक मटरूमल और उदघोषक है। गिरिराज किशोर का यह आठवाँ नाटक है।प्रस्तुत नाटक आधुनिक भारत देश की स्थिति का परिचय कराता है।वर्तमान सांस्कृतिक, भौगोलिक एवं राजनीतिक परिवेश में केवल भारत की ही नहीं बल्की संसार के सारे देशों की स्थिति इस नाटक में दर्शायी स्थितियों पर खरी उतरती है।आज मानवीय संबंध बिघड़ते जा रहे हैं। इस नाटक में विकसनशील देश विकसीत देशों दवारा शक्ति प्रदर्शन या शक्तीशाली दिखाने के लिए हाथियार खरीद रहें है।इस नाटक का उद्देश्य अमेरिका जैसे देशों दवारा हाथियार बेचकर भारत-पाकिस्तान और चीन जैसे देशों को लड़ाने और सामान्य जनता

---

1. गिरिराज किशोर - काठ की तोप - पृष्ठ - 46

15516

का शोषण करनेवाले नीति देशों का पर्दाफाश करना रहा है। यह नाटक आधुनिक युग की स्थिति पर आधारित है। प्रस्तुत नाटक रंगमंचियता की दृष्टि से सफल है। प्रस्तुत नाटक के अब तक पाँच प्रयोग 'दी परफारर्मन्स' उदयपुर ने किए हैं। इस नाटक के पात्र इस प्रकार है...

1	बड़े नवाब	-	डॉ.सुभाष भार्गव
2	छोटे नवाब	-	डॉ.परमेंन्द दशोरा
3	एक	-	राहुल कन्जारी
4	दो	-	गिरिराज
5	तीन	-	ललेश मेजवाल
6	चार	-	रशीद खान
7	सुत्रधार	-	भुनभुन राया प्रतिभा भण्डारी
8	मटरूमल	-	मनोज सुखवानी
9	कर्राश एक	-	मौहम्मद शकील
10	कर्राश दो	-	आदिल इमरान
11	व्यापारी एक	-	आरिफ
12	व्यापारी दो	-	अजगर अली
13	सदर	-	श्रीमती अनुकम्पा लईक

'दी परफार्मस' उदयपुर ने 'काठ की तोप' नाटक के पाँच प्रयोग किए वह इस प्रकार है...

1. 6 नवंबर, 1995, केंद्रीय कारागृह, उदयपुर।
2. 15 नवंबर, 1995, लोककला मण्डल, उदयपुर।
   (भाषायी नाट्य समारोह के अन्तर्गत।)
3. दिसंबर 17, 1996, अखिल भारतीय नाट्य उत्सव, जयपुर।

4. दिसंबर 19, 1996, अखिल भारतीय नाट्य उत्सव, उत्तर मध्य सांस्कृतिक केंद्र, इलाहाबाद, उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र पटियाला, पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर एवं राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर के संयुक्त तत्वधान में आयोजित किया गया। इस नाट्य उत्सव में किशोर जी का यह नाटक उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, पटियाला द्वारा प्रायोजित किया गया। अन्य दो सांस्कृतिक केंद्रो द्वारा श्री वंशी एवं श्री वामन केंद्र के नाटक प्रायोजित किए गए गये जब कि राजस्थान नाटक संगीत अकादमी ने राजस्थानी लोकनाट्य ख्याल 'गोग चौहान' प्रयोजित किया।

5. दिसंबर 26, 1996, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नयी दिल्ली एवं पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर द्वारा आयोजित सघन नाट्य प्रशिक्षण शिबिर के उद्घाटन अवसर पर शिल्पग्राम, उदयपुर।

निष्कर्ष :

मानवीय संवेदनाओं के गहन तथा मार्मिक सृजनकार नाटककार गिरिराज किशोर के 'नरमेध', 'प्रजा ही रहने दो', 'घास और घोड़ा', 'चेहरे -चेहरे किसके चेहरे', 'केवल मेरा नाम लो', 'जुर्म आयद' और 'काठ की तोप' इन विवेच्य नाटकों का कथ्य समाज जीवन से जुड़ा हुआ है। इन नाटकों का कथ्य मानवतावादी मूल्यों से निहीत है। प्रस्तुत नाटकों के कथ्य में मानव जीवन की यथार्थता को बड़ी गहराई के साथ चित्रित किया है। प्रस्तुत नाटकों का विवेचन करने के पश्चात् स्पष्ट होता है कि 'जुर्म आयद' तथा 'घास और घोड़ा' यह दो नाटक सामाजिक समस्याओं को उदघाटित करते हैं। प्रस्तुत नाटकों में भारतीय समाज-व्यवस्था की जाति-व्यवस्था, नारी-शोषण, गरीबी आदि समस्याओं को स्पष्ट किया गया है। 'नरमेध' नाटक मानसिक पीडा से पीड़ित नारी तथा पारिवारिक समस्या पर आधारित है। इसमें असफल प्रेम और नारी की मानसिक स्थिति को गहराई के साथ चित्रित किया गया है। 'प्रजा ही रहने दो' पौराणिक नाटक है। इसमें युद्ध के समस्या की भीषणता को स्पष्ट किया है। 'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे' व्यंग्य

नाटक है। इसमें गिरिराज किशोर ने भ्रष्ट राजनीति, खोखले, दिखावटी आचार-विचारों का पर्दाफाश किया है। साथ ही मध्यवर्गीय लोगों के शोषण को स्पष्ट किया है। 'केवल मेरा नाम लो' यह नाटक मानसिक पीडा से पीड़ित तथा कुंठित भावना से ग्रस्त व्यक्ति पर आधारित है। 'काठ की तोप' राजनीतिक नाटक है। इसमें पारिवारिक अलगाव, स्वार्थी वृत्ति, शोषण वृत्ति, लोभ के कारण स्वयं तथा दूसरों के अहितता को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया गया है।

अत: प्रस्तुत अध्याय 'गिरिराज किशोर' के नाटकों का सामान्य परिचय' का अध्ययन करने के पश्चात् हम इस नतीजे पर पहुँचते है कि विवेच्य नाटक समाजाभिमूकता की दृष्टि से बींसवीं शताब्दी के मानवीय जीवन में स्थित कई समस्याओं को उदघाटित करते हैं। भाषा, पात्र, उद्देश्य की दृष्टि से विवेच्या नाटक मौलिक कृतियों में अपना स्थान अग्रक्रम पर लिए हुए है। गिरिराज किशोर ने मानवीय पीड़ा की सूक्ष्म, व्यापक एवं वैविध्यपूर्ण परिवर्तनवादी विचारधारा की माँग प्रस्तुत नाटकों के कथ्य में दर्शायी है और पाठकों के मन-मस्तिष्क को प्रेरित किया है कि मानव-मानव बना रहें और सृष्टि में एक-दूसरे के प्रति सहृदयी भावनाओं को संजोये रख्खे

गिरिराज किशोर के विवेच्य नाटक समाज जीवन का यथार्थ एवं सजीव चित्रण ही नहीं करते बल्कि मानव की सोयी हुई अस्मिता को जागृत कर उसकी दिशाहीन मानसिकता को सही राह पर लाने का अथक प्रयास करते हैं। किशोर जी ने विवेच्य नाटकों के केंद्र में व्यक्ति, समाज और प्रकृति को रखकर ने उनकी महत्ता को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

गिरिराज किशोर के विवेच्य नाटकों के कथ्य में निहित तथ्य का अवलोकन करने के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष तक पहुँचा हूँ कि गिरिराज किशोर के विवेच्य नाटकों का मूल स्वर मानव जीवन से संबंधित 'समस्या' हैं।